**मेघ की बूंदे जेती परे, ना कोई वनस्पति निरमान करे।**
**जदिप को निरमान होए, पर गुन धनी के ना गिने कोए।। ९ ।।**

बादलों की वर्षा की बूंदें नहीं गिनी जा सकतीं। वृक्षों के पत्ते भी नहीं गिने जा सकते। यदि इनको गिन भी लिया जाए फिर भी धनी के गुणों को गिनना सम्भव है ही नहीं।

**इन बेर के भी कहे न जाए, तो और बेर के क्यों कहूं जुबांए।**
**पेहेले फेरे की क्यों कहूं बात, गुन जो किए धनी साख्यात।। १० ।।**

इस बार जो गुण किए हैं वही नहीं गिने जा सकते, तो उनके पूरे गुण जबान से कैसे कहे जाएं? पहले फेरे के बृज और रास की बात कैसे करूं? जो धनी ने हमारे ऊपर साक्षात् एहसान किए थे।

**क्यों धनी गुन गिनूं इन आकार, पर कछुक तो गिनना निरधार।**
**इंद्रावती कहें मैं गुन गिनों, कछुक प्रकासूं आपोपनों।। ११ ।।**

इस माया के तन से भी धनी के गुणों को कैसे गिनूं? पर कुछ तो गिननी हैं। ी इन्द्रावतीजी कहती हैं कि मैं धनी के गुण गिनती हूं और कुछ अपनी पहचान कराती हूं कि मैंने धनी से पहचाना।

|| प्रकरण || २६० ||

## श्री धनीजी के गुन || ११ ||

**मैं लिखूं श्री धनीजी के गुन, जो रे किए मो**
**जोजन पचास कोट जिमी केहेलाए, आड़ी टेढ़ी ।। १ ।।**

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि मैं धनीजी के गुण लिखती हूं जो उन्होंने मेरे साथ बहुत अधिक किए। पचास करोड़ योजन जमींन कहलाती है जिसमें आड़ी, टेढ़ी, ऊंची, नीची सब आ जाती है।

**चौदे लोक बैकुंठ सुंन जोए, जिमी बराबर करूं सोए।**
**मैं प्रगट बिछाए करूं एक ठौर, टेढ़ी टाल करूं सीधी दोर।। २ ।।**

चौदह लोक, बैकुण्ठ, शून्य, निराकार से लेकर सारी जमीन को एक समान करूं। फिर इसे एक साथ सीधी बिछाकर टेढ़ा-मेढ़ा, भाग सीधा कर दूंगी।

**कागद धर्‍यो मैं याको नाम, गुन लिखने मेरे धनी श्रीधाम।**
**चौदे भवनकी लेऊं वनराए, तिनकी कलमें मेरे हाथ गढ़ाए।। ३ ।।**

इसका मैंने कागज नाम रखा। इसमें मेरे धाम के धनी के गुण लिखने हैं। अब चौदह लोकों के पेड़ पौधों को इकट्ठा करती हूं। उनकी कलमें अपने हाथ से बनाती हूं।

**गढ़ते सरफा करूं अति घन, जानों बड़ी छोही उतरे जिन।**
**ए सरफा मैं फेर फेर करूं, अखंड धनी गुन हिरदे धरूं।। ४ ।।**

कलम बनाते समय खास कजूंसी करूंगी। ऐसा न हो कि नोंक बनाते समय कहीं छिलका मोटा उतर जाए। मैं बार-बार कंजूसी करती हूं और अखण्ड धनी के गुण हृदय में रखती हूं।

Nijanand App

**बारीक टांक मेरे हाथों होए, ऐसी करूं जैसी करे न कोए।**
**कोई तो केहेती हों जो माया लागी तुम, बोहोतक कह्या जो पेहेले हम।।५ ।।**

अपने हाथ से नोंक बारीक से बारीक बनाऊंगी। इतनी बारीक बनाऊंगी कि इतनी बारीक कोई नहीं बना सकता। कोई तो इसलिए कहा है कि तुम सुन्दरसाथ माया में बैठे हो, जिसके लिए मैंने पहले बहुत कुछ कहा है।

**तुमको माया लागी होए सत, तुम बिना और सबे असत।**
**इन जिमी ऊपर के लेऊं सब जल, और लेऊं सात पाताल के तल।।६ ।।**

हे साथजी ! तुमको माया सच्ची लग रही है। हकीकत यह है कि सिर्फ तुम सत (सत्य) हो, बाकी सब मिट जाने वाले हैं। इस जमीन के ऊपर का सब जल इकट्ठा कर लेती हूं और सात पाताल लोकों का पानी ले लेती हूं।

**जल छे लोक के लेऊं लिखनहारी, एक बूंद न छोडूं कहूं न्यारी।**
**सब जल मिलाए लेऊं मेरे हाथ, गुन लिखने मेरे श्रीप्राणनाथ।।७ ।।**

ऊपर के छः लोकों का भी पानी लेती हूं और एक बूंद भी कहीं नहीं छोडूंगी। सब जल को अपने हाथ से मिला लूंगी। मुझे अपने प्राणनाथ के गुण लिखने हैं।

**बाकी स्याही करूं मैं अति विगत, एक जरा न जाए समारूं इन जुगत।**
**ए कागद कलम मस कर, मांहें बारीक आंक लिखूं चित धर।।८ ।।**

स्याही अपने हाथ से निराले ढंग से बनाऊंगी। इस युक्ति से बनाऊंगी कि थोड़ी सी स्याही का भी नुकसान न हो। यह कागज, कलम और स्याही इकट्ठी करूं। एकचित्त (दत्तचित्त) होकर बारीक अंक लिखती हूं।

**गुन जो किए पिउ तुम इत आए, सो इन जुबां मैं कहे न जाए।**
**देह माफक मैं लिखूं परमान, एक पाओ लवे का काढूं निरमान।।९ ।।**

हे मेरे धनी ! यहां आकर आपने जितने एहसान किए हैं वह इस जबान से कहे नहीं जाते। मैं अपनी बुद्धि (शक्ति) के माफिक लिखती हूं और एक चौथाई अक्षर का भी हिसाब करती हूं।

**अब लिखती हूं साथ देखियो उजास, मैं गजे माफक करूं प्रकास।**
**मैं बोहोत सकोडूं आंक लिखते ए, जिन जानों मींडे होंए बडे।।१० ।।**

अब मैं धनी के गुण लिखती हूं जिसे साथजी जाहिर देखना। मैं अपनी बुद्धि के अनुसार जाहिर करती हूं। मैं बहुत छोटे आकार के अंक लिखती हूं जिससे बिन्दियां बड़ी न हो जाएं।

**प्रथम एकड़ा करूं एक चित, लगता मींडा धरूं भिलत।**
**मेरे हाथ अखर कुसादे न होए, मैं डरूं जानों मिले न दोए।।११ ।।**

सबसे पहले एकचित्त होकर एक का अंक लिखती हूं और उसके साथ लगती एक बिन्दी लिखती हूं। मेरे हाथ से अक्षर फैले नहीं और दोनों मिल न जाएं इसकी सावधानी रखती हूं।

Nijanand App

**यों करते ए दस जो भए, मींडा धरके एक सौ कहे।**
**भी एक धरके गिनूं हजार, धनी गुन दया को नाहीं पार।। १२ ।।**

ऐसा करके दस की गिनती हो गई। एक बिन्दी और लगाई तो सौ की गिनती हुई। फिर एक बिन्दी रखकर हजार गुण गिने। धनी के गुण और दया का शुमार (गिनती) नहीं है।

**भी लगता मींडा धरूं एक, जीव से गिनूं दस हजार विसेक।**
**भी एक धरके लाख गिनाए, भी धरूं ज्यों दस लाख हो जाए।। १३ ।।**

फिर उसके साथ एक बिन्दी लगाई और दस हजार गुणों की गिनती की। एक बिन्दी रखकर लाख गुण गिने। फिर एक बिन्दी रखकर दस लाख हो गए।

**कोट होवे मींडा धरते सातमां, दस कोट करूं मींडा धरके आठमां।**
**नवमां धरके करूं अबज, गुन गिनती जाऊं करती कबज।। १४ ।।**

सातवीं बिन्दी रखकर करोड़ की गिनती गिनी और आठवीं रखकर दस करोड़ की। नौवीं रखकर एक अरब (अबज) की गिनती करूं और इसी तरह से धनी के गुण गिनती जाऊं और धनी को अपने वश में करती जाऊं।

**दस धरके करूं अबज दस, गुन गिनते आवे मोहे अति घनो रस।**
**अग्यारे धरके करूं खरब एक, लिखते गुन धनी ग्रहूं विसेक।। १५ ।।**

दसवीं बिन्दी रख दस अरब की गिनती गिनती हूं। गुण गिनते हुए मुझे बड़ा आनन्द आता है। ग्यारहवीं बिन्दी रखके एक खरब की गिनती गिनूं और गुण गिनते धनी को विशेष रूप से ग्रहण करूं।

**बारे धरके दस करूं खरब, पेहेले यों गिनके किन कहे न कब।**
**तारतम कहे और कौन गिने गुन, हुआ न कोई होसी हम बिन।। १६ ।।**

बारहवीं बिन्दी रखकर दस खरब की गिनती करूं। पहले इस तरह से आज तक गुण किसी ने नहीं गिने। तारतम वाणी कहती है कि गुण गिन कौन सकता है? हमारे बिना न कोई ऐसा हुआ है और न कोई होगा।

**मैं गुन गिनूं श्रीधामधनी के रे, पर कमी कागद कलम मस मेरे।**
**कमी तो केहेती हूं जो बैठी माया मांहें, ना तो कमी नहीं कछुए क्यांहें।। १७ ।।**

मैं धाम धनी के गुण गिनती हूं। पर कागज, कलम और स्याही की कमी देख रही हूं। कमी तो इसलिए कहती हूं कि माया में बैठी हूं। नहीं तो वास्तव में कमी कुछ है नहीं।

**साथ कारन मैं करूं पुकार, देखों वासना मोहजल वार पार।**
**तेरह धरके गिनूं गुन नील, घने समावें गुन हिरदे असील।। १८ ।।**

सुन्दरसाथ के वास्ते मैं पुकारकर कहती हूं कि हे मेरी आत्माओ ! भवसागर के पार देखो। तेरहवीं बिन्दी रखकर नील की गिनती गिनूं और धनी के गुणों को हृदय के अन्दर सम्भाल कर रखूं।

**चौदे धरके करूं नील दस, गुन प्रकास लेऊं धनी जस।**
**पंद्रे धरके करूं पदम, मेरे धनी के गुन की मैं करूं गम।। १९ ।।**

चौदहवीं बिन्दी रखकर दस नील की गिनती गिनूं और धनी के गुण इस तरह से बताकर बड़ा यश लूं। पन्द्रहवीं बिन्दी रखकर पदम की गिनती करूं और अपने धनी के गुणों को बड़ी सहन शक्ति से ग्रहण करूं।

Nijanand App

**सोले धरके करूं पदम दस, गुन नजरों आवते हुए धनी बस।**
**सत्रे धरके करूं गुन अंक, अठारे धरूं ज्यों होंए गुन संक।। २० ।।**

सोलहवीं बिन्दी रखकर दस पदम की गिनती करूं और धनी के गुणों को नजर में लेकर धनी को वश में करूं। सत्रहवीं बिन्दी रखकर 'अंक' की गिनती कर अठारहवीं बिन्दी रखूं और संख की गिनती करूं।

**सुरिता करूं धरके उनईस, पत गुन ग्रहूं धरके बीस।**
**अंत करूं धरके इकैस, मध करूं गुन दोए धर बीस।। २१ ।।**

उन्नीसवीं बिन्दी रखकर सुरिता की गिनती करूं। बीसवीं बिन्दी रखकर पत तक गुण गिनूं। इक्कीसवीं बिन्दी रखकर अन्त तक गिनती गिनूं और बाईसवीं रखकर मध तक गिनती गिनूं।

**एकड़ा ऊपर तेईस मींडे धरूं, प्रारध करके लेखा मेरा करूं।**
**लौकिक लेखे गुन न गिनाए, मेरे धनी के गुन यों गिने न जाए।। २२ ।।**

एक के ऊपर तेइसवीं बिन्दी रखकर प्रारध की गिनती करूं। इस लौकिक तरीके से गुण नहीं गिने जाते। मेरे धनी के गुण गिनना इस तरह से सम्भव नहीं है।

**हिसाब करूं साथ देखियो विचार, गुन जाहेर हुए प्राणके आधार।**
**प्रारध गुने एक मींडेसों बढ़े, दूजे सों हर एक यों चढ़े।। २३ ।।**

हिसाब करती हूं, साथजी ! विचार कर देखना। मेरे प्राणों के आधार के गुण जाहिर हुए। एक बिन्दी रखने से गुण प्रारध गुना बढ़ जाते हैं और इसी तरह से दूसरी बिन्दी रखकर गिनती बढ़ जाती है।

**यों करते ए होवें जेते, इन बिध चढ़ते जांए तेते।**
**ए हिसाब मेरी आतमा करे, गुन धनी हिरदे अंतर धरे।। २४ ।।**

इस तरह से करते हुए जितने गुण हुए उसी तरह से संख्या बढ़ती जाती है। इनका हिसाब मेरी आत्मा करती है और धनी के गुणों को हृदय में धरती है।

**लिखते गुन धनी हिरदे आए, पर डरूं जानों कागद में न समाए।**
**कलमों को मेरा जीव ललचाए, गढ़ते गढ़ते जानों जिन उतर जाए।। २५ ।।**

गुण लिखते-लिखते धनी हृदय में आ गए, पर डरती हूं कि कहीं ऐसा न हो कि गुण कागज में न समाएं। कलमों को मेरा जीव ललचाता है। ऐसा न हो कि घड़ते-घड़ते (गड़ते-गड़ते) समाप्त हो जाएं।

**सरफा करूं मैं लिखते स्याही, जिन लिखते अधबीच घट जाई।**
**यों धरते धरते मींडे रहे भराए, वार किनार सब रहे समाए।। २६ ।।**

गुण गिनने में मैं स्याही की कंजूसी करती हूं। लिखते-लिखते कहीं अध बीच में कम न हो जाए। इस तरह से बिंदियां धरते-धरते कागज भर गया। किसी भी किनारे पर जगह नहीं बची।

**ए कागद यों पूरन भया सही, स्याही कलमें कछू बाकी न रही।**
**अब ए गुन गिनूं मैं नीके कर, आतम के अन्दर ले धर।। २७ ।।**

इस तरह से एक कागज पूरा हुआ। स्याही कलम कुछ भी नहीं बचा। अब मैं इन गुणों को अच्छी तरह गिनती हूं और आत्मा के अन्दर धारण करती हूं।

Nijanand App

**ए तो गुन गिने मैं चित ल्याए, पर इन धनी के गुन यामें न समाए।**
**भी करूं दूजे लिखने के ठाम, गुन लिखने मेरे धनी श्रीधाम।। २८ ।।**

इन गुणों को मैंने एक चित्त से गिना है। धनी के गुण इसमें नहीं समाते हैं। अब दूसरे कागज लिखने का प्रबन्ध करती हूं मुझे मेरे धनी के गुण लिखने हैं।

**ए गुन मिल जमें भए जेते, या बिध ऐसे कागद लिखे एते।**
**ऐसे कागद ऐसी स्याही कलम, मांहें बारीक आंक लिखे हैं हम।। २९ ।।**

इस तरह गिनने में जितने गुण गिने, इस तरीके से इतने कागज लिख डाले। ऐसे कागज, ऐसी स्याही, ऐसी कलमों से मैंने बारीक अंक लिखे हैं।

**इन कलमों की मैं देखी अनी, कछू कर न सकी बारीक घनी।**
**ए गुन गिन मैं एकठे किए, सो अपने हिरदे में लिए।। ३० ।।**

इन कलमों की नोंक को मैंने देखा, पर इससे अधिक बारीक न कर सकी। इन समस्त गुणों को गिनकर मैंने इकट्ठा किया और अपने हृदय में रखा।

**कलमें समारी जोस बुध बल, घडूं रास कर काढ़ के बल।**
**एक जीव कहियत है कथुआ, ए जो जिमी पर पैदा हुआ।। ३१ ।।**

मैं सम्भाल कर अपनी बुद्धि के बल से लकड़ी का टेढ़ापन निकालकर सीधा बनाकर कलमें बनाती हूं। एक कथुआ (कागज खाने वाला कीड़ा) कहलाता है जो जमीन पर पैदा होता है।

**कथुए के पांउ का गुन जेता भाग, कलमों की टांक मैं देखी चीर लाग।**
**इन अनियों आंक लिखे यों कर, ए जेता कागद एती बेर फेर फेर।। ३२ ।।**

कथुए के पांव के उतने ही हिस्से किए जितने गुण गिने हैं, उतनी बारीक कलमों की नोंक मैंने बनाई, और इनकी नोंकों से बारीक अंक लिखे। जितने कागज थे उतनी ही बार ऐसे लिखे।

**यों लिख लिख के मैं गिने गुन, पर मेरे धनी के गुन हैं अति घन।**
**ए गुन मिलाए के एकठे किए, सो नीके कर मैं चित में लिए।। ३३ ।।**

ऐसा लिख-लिखकर मैंने धनी के गुण गिने। मेरे धनी के गुण बहुत अधिक हैं। इन सब गुणों को मिलाकर मैंने इकट्ठा किया और अपने चित्त में धारण कर लिया।

**ए लिखते मोहे केती बेर भई, तिनका निरमान काढ़ना सही।**
**जेते मिल के भए ए गुन, तेते बांटे किए एक खिन।। ३४ ।।**

यह लिखने में मुझे कितना समय लगा, इसका भी हिसाब लगाती हूं। एक पल में इतने हिस्से किए जितने गुण हैं।

**बेर भई एक बांटे जेती, ए सब कागद लिखे मांहें बेर एती।**
**ए लिख लिख के मैं लिखे अपार, अब ए बेर निरने करूं निरधार।। ३५ ।।**

पल के एक हिस्से में सब कागज लिखे गए। ऐसे लिख-लिखकर मैंने अनन्त बार लिखे। अब उसका भी मैं हिसाब लगा दूं।

Nijanand App

**गुन जेते महाप्रले भए, वाही जोस में लिख गुन कहे।**
**बीच में स्वांस न खाया एक, ढील ना करी कछू लिखते विसेक।। ३६ ।।**

जितने गुण थे उतने महाप्रलय हुए। उसी जोश में यह गुण लिखकर कहे। गुण गिनते समय एक सांस भी खाली नहीं गया और जरा भी सुस्ती नहीं की।

**एह जमें मैं गुन की कही, श्रीसुन्दरबाईऐं सिखापन दई।**
**साथ जाने लेखा जोर किया अपार, पर मेरे जीव के दरद की न दबी किनार।। ३७ ।।**

इन सब गुणों को मैंने इकट्ठा किया और जितना योगफल (Total) आया इतने ही सिखापन श्यामा महारानी ने सुन्दरसाथजी को दिए। साथ जानता है कि मैंने बेशुमार (अनगिनत) गुणों का हिसाब किया। पर मेरे जीव में जो दर्द है, उसका एक अंश भी नहीं हुआ।

**जीव मेरा बड़ा वतनी पात्र, अजूं जीव जानें ए लिख्या तुछ मात्र।**
**गुन तो बाकी भरे भंडार, सोई भंडार गुन गिनूं आधार।। ३८ ।।**

मेरे जीव का बर्तन बहुत बड़ा है। जीव तो जानता है कि अभी तो कुछ भी गिनती नहीं हुई, गुणों के तो बाकी भण्डार भरे पड़े हैं। अब उन भण्डारों की भी गिनती करती हूं।

**ए गुन गिने मैं हिरदे विचार, गुन जेते भंडार गिने निरधार।**
**गिनते गिनते बाकी देखे अपार, तिनका भी मैं करना निरवार।। ३९ ।।**

इन गुणों को हृदय में विचार करके गिना और जितने गुण गिने गए उतने ही ऐसे भण्डार भर दिए। फिर देखा कि गुणों के भण्डार बहुत बाकी हैं। इसका भी मुझे हिसाब करना है।

**मैं ना करूं तो दूजा करे कौन, कर निरवार ग्रहूं धनी के गुन।**
**बाकी भंडार का लेखा देऊं मेरे पिउ, ए मुस्किल नहीं कछू मेरे जिउ।। ४० ।।**

मैं न करूं तो दूसरा कौन करेगा? इसलिए धनी के गुणों का हिसाब कर गुण ग्रहण करती हूं। बाकी भण्डार का हिसाब भी अपने पिया को दूंगी। मेरे जीव के लिए यह कुछ भी कठिन नहीं है।

**ए गुन गिन किए जीवें अपने हाथ, पल पल पसरे गुन प्राणनाथ।**
**ए सब तो कहूं जो गुन ठाढ़े रहे, ए गुन मन की न्यात दौड़े जाए।। ४१ ।।**

यह गुण मेरे जीव ने गिनकर अपने हाथ में ले लिए, परन्तु प्राणनाथ जी के गुण (मेहर) पल-पल बढ़ रहे हैं। यह सबकी गिनती तो बताऊं जो गुण (मेहर) स्थिर रहे। गुण (मेहर) तो मन की तरह दौड़ रहें हैं।

**अब एता तो मैं किया निरमान, और बाकी कहूंगी मांहें फुरमान।**
**एक खिन के मैं बांटे किए, गुन जेते भाग विचार के लिए।। ४२ ।।**

अब मैंने इतना निश्चय किया कि बाकी गुणों को मैं इस वाणी में कहूंगी। एक क्षण के मैंने उतने हिस्से किए जितने कि गुण हैं।

**तामें बेर एक बांटे की कही, पिया गुन एते में तेते किए सही।**
**ए गुन गिनते मेरा कारज सरया, आतम मूल सरूप हिरदे में धरया।। ४३ ।।**

फिर एक क्षण के हिस्से में पिया के जितने गुण हैं उतने हिस्से और किए। इतने समय में मेरा काम सिद्ध हो गया कि धनी का मूल स्वरूप हृदय में आ गया।

Nijanand App

**सारे जनम के क्यों कहूं गुन, पिया देह धर आए किए धंन धंन।**
**गुन पांच जनम के क्यों कहूं सोय, धनी दया आई धनी की खुसबोए।। ४४ ।।**

अब सारे जन्म के गुण गिनने की क्या आवश्यकता है? इतने में ही प्रीतम मेरे अन्दर आ गए। मैं धन्य धन्य हो गई। पांच जन्मों के (बृज, रास, बरारब, नौतनपुरी और श्री पन्ना की) गुणों की कैसे कहूं? धनी की दया से ही यह सब सुगन्ध अन्दर आ गई है।

**ए गुन गिने मैं अस्थिर आकार, ना तो यों क्यों गिनूं मेरे प्राणके आधार।**
**अब बात करसी तुम अग्या केरी, मुझे आसा इत जाग उड़ाऊं अंधेरी।। ४५ ।।**

यह गुण मैंने माया के तन से गिने हैं। नहीं तो इस तरह से मेरे प्राणनाथ के गुण नहीं गिने जाते। हे धनी ! अब तुम्हारी आज्ञा के अनुसार ही काम करूंगी। मुझे आशा है कि इस संसार का अंधेरा मिटाकर सबको जागृत करूंगी।

**पिउ तुम आए माया देह धर, साथ की मत फिर गई क्यों कर।**
**हांसी करसी पिउ साथ पर, क्या करसी माया जब मांगी घर।। ४६ ।।**

हे धनी ! आपने माया में आकर तन धारण किया। फिर भी साथ की बुद्धि क्यों बदल गई? पियाजी सुन्दरसाथ के ऊपर हंसी करेंगे। माया तो घर में ही बैठकर मांगी थी। वह सिवाय हंसी के और क्या करेगी?

**तुम लई खबर हमारी ततखिन, ले आए तारतम देखाया वतन।**
**पिया हांसी करसी अति जोर, भुलाए मायाऐं कर बैठाए चोर।। ४७ ।।**

हे धनी ! आपने मेरी तुरन्त ही सुध ली और तारतम वाणी लाकर घर दिखाया। धनी माया में हम भूलकर चोरों की तरह गए हैं। इस बात की हंसी धनी परमधाम में करेंगे।

**अब करेंगे जाए वतन बात, माया अमल चढ़्यो निघात।**
**पिउ कई विध तारतम कियो रोसन, तो भी क्योंए न भैयां चेतन।। ४८ ।।**

माया का नशा जोर का चढ़ा है। इस बात को घर में जाकर करेंगे। धनी ने कई तरह से तारतम वाणी से जगाया, तो भी सुन्दरसाथ जागे नहीं।

**लेवे इंद्रावती वारने गुन जेते, इत सुख दिए हमको एते।**
**घर के सुख की इत कैसी बात, घर के सुख घरों होसी विख्यात।। ४९ ।।**

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि हमको इस माया मोह में धनी ने जितने सुख दिए हैं (एहसान किए हैं) उतनी ही बार मैं उन पर वारी-वारी जाती हूं। यहां माया में घर परमधाम के सुख की बात नहीं है। घर के सुखों की चर्चा घर में होगी।

**चरनो लाग कहें इंद्रावती, गुन न देखे किन एक रती।**
**धनी जगाए के देखावसी गुन, तब हांसी होसी अति घन।। ५० ।।**

श्री इन्द्रावतीजी चरणों में लगकर कहती हैं कि सुन्दरसाथ ने धनी की एक मेहर (गुन) को भी नहीं पहचाना। अब धनी सुन्दरसाथ को जगाकर अपनी मेहर की पहचान कराएंगे, तब बहुत हंसी होगी।

॥ प्रकरण ॥ १२ ॥ चौपाई ॥ ३१० ॥

Nijanand App